UN – 038

-31-

III Semester B.Com. Examination, November/December 2015
(Fresh) (CBCS) (2015-16 & Onwards)
LANGUAGE HINDI – III
Natak, Nibandh and Sankshiptikaran

Time : 3 Hours

Max. Marks : 70

ST. CLARET COLLEGE LIBRARY

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **एक** शब्द या वाक्य में लिखिए : **(1×10=10)**

1) 'वैतरणी के पार' के नाटककार कौन है ?
2) कौन अपने नाम से एक यूनिवर्सिटी स्थापित करना चाहता था ?
3) इक्ष्वाकु किसे जारपुत्र कहता है ?
4) कुम्भीपाक में किसे रहना पड़ता है ?
5) लोगों ने जीवात्मा –7 का क्या नाम रख दिया था ?
6) जीवात्मा –8 का स्वर्ग के सभी देवताओं की ओर से कौन अभिनन्दन करता है ?
7) सारथेय कौन है ?
8) कीड़े की योनि में जन्म लेने का दण्ड किसे मिलता है ?
9) जीवात्मा –2 को सजा भुगतने के लिए किस लोक में भेजा जाता है ?
10) महारौरव नरक में किसे भेजा जाता है ?

II. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **(6×2=12)**

1) पार करने का प्रयास कर रहे हैं, किन्तु शीघ्रता से पार नहीं कर पा रहें हैं।वैतरणी के पानी में झुलस रहे हैं और रक्त मांस और अस्थियों से आवृत है।
2) हाँ नाथ। जब मैं तुम्हारे मृत शरीर के साथ चिता पर जा बैठी तब वहाँ हजारों लोग इकट्ठा हुए थे। मेरी जयजयकार कर रहे थे। मैं फूली न समाई। लेकिन जब चिता को आग दी गई तब मैं उसकी आँच सह न सकी। मैं बाहर कूदना चाहती थी।
3) क्यों महाराज ? मेरी विद्वता मेरी अपनी है। अपनी सम्पत्ती है। उसे देना अथवा न देना मेरी इच्छा पर है।
4) जब तक जनतन्त्र जागृत नहीं होगा, बलवान नहीं होगा, प्रशिक्षित और प्रबुद्ध नहीं होगा, तब तक उसे ऐसे राजनेताओं से दु:ख-पीड़ा-शोषण भुगतना होगा।

III. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी **एक** का उत्तर लिखिए : **(12×1=12)**

1) वैतरणी के पार नाटक में विकृतियों का निषेध करते हुए नाटककार ने अच्छे मनुष्य और बेहतर समाज बनाने की संकल्पना की है। विवेचना कीजिए।

2) 'वैतरणी के पार' नाटक का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

IV. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : **(6×1=6)**

1) यमराज

2) जीवात्मा – 1

V. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं **दो** पर निबंध लिखिए : **(10×2=20)**

1) बैंकों का राष्ट्रीकरण

2) आतंकवाद और अर्थ व्यवस्था।

3) विज्ञापन और महिला।

VI. निम्नलिखित अनुच्छेद का उचित शीर्षक देते हुए **एक तिहाई** शब्दों में संक्षिप्तीकरण कीजिए : **(10×1=10)**

वाल्मिकि की रामकथा ई सा की पूर्व शतियों से कुशीलव नामक चारण जातियों द्वारा गाई जाती हुई लोक में प्रचलित थी और इसका प्रारम्भिक नाम 'पौलस्त्यवध' महाकाव्य था। महर्षि वाल्मिकि ने श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों को आधार बनाकर समूचे रामकथा प्रसंग को एक नया स्वरूप तथा अर्थ प्रदान किया। राम का सदाचार से परिपूर्ण आचरण एवं रावण का अनीति एवं अत्याचार से भरा कुकर्म आमने-सामने अनाचार तथा सदाचार के द्वन्द्व के रूप में आता है और कवि वाल्मिकि इस द्वन्द्व के द्वारा सदाचार की विजय चित्रित करके तथा अराजकता से परिपूर्ण मानवीय जीवन की पराजय दिखाकर मानव जाति के नैतिक पक्ष को सुदृढ़ करते हैं।